अलङ्कारदर्पण ।

जिस्में

समस्त अलङ्कारों के लक्षण और उदाहरण

भली प्रकार दोहों में दिखाये गये हैं ।

इस ग्रंथ को

नरवलगढ़निवासी महाराजबीरवर छत्रसिंह

के पुत्र महाराजरामसिंहजी ने रसिक

जनों के निमित्त बिरचा ।

सिहोरनिवासी कविगोविन्द गीलाभाई की

सहायता से यह ग्रंथ प्राप्त हुआ ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सम्वत् १९५६ ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।)

श्रीगणेशाय नमः ।

अलङ्कारदर्पण ।

दोहा ।

मो मन अनुराग्यौ रहै सदा रावरी ओर ।
यह माँगौ कर जोरि कै राधा-नन्दकिशोर ॥१॥
कविता अरु बनितान कौं अलङ्कार छवि देत ।
जैसैं रैनि कुमोदनी ससि सोभा कौ हेत ॥ २ ॥
बरनन जाकौ कीजिये सो उपमेय प्रमान ।
उपमा जाकी दीजिये सो कहिये उपमान ॥३॥
सो से सौ सम तुल्य लौं द्रुमि समान जिमि जानि
अरथ बराबर प्रगट जो करै सुवाचक मानि॥४॥
उपमा अरु उपमेय कौ बरनै गुननि समान ।
यौं साधारन धरम कौ कीजै समुझि बखान॥५॥

सोरठा ।

उपमेय रु उपमान, और मिलै वाचक धरम ।
पूरन उपमावान सो उपमालङ्कार है ॥ ६ ॥

उदाहरण दोहा ।

मुख ससि सों उज्जल चपल खञ्जन से हैं नैन ।
सुवरन सों तिय-तन लसै मधुर सुधा से बैन॥७॥

सोरठा ।

बरनत हैं मतिधीर, उपमे उपमा धरम कौ ।
जहँ वाचक भाषैं न, सो वाचकलुप्ता कहैं ॥८॥

उदाहरण—दोहा ।

मुख शशि निरमल लाल कौ मेरे नैन चकोर ।
भरे खरे री चाह सों लगे रहै जिहिँ ओर ॥६॥

सोरठा ।

उपमे उपमा होइ, वाचकहू बरनैं हतिय ।
धरम लुप्त सब कोइ, कहत धरम कौ लोप जहँ ॥

उदाहरण—दोहा ।

पिक-बानी सी लगति है तौ मुख की बतरानि ।
तो गति गजगति सी अहै पिय मन कौ सुखदानि॥

सोरठा ।

बरनत सुमति-निधान, उपमे वा वाचक धरम ।
लुप्त जहाँ उपमान, सो लुप्ता उपमान कहि॥१२॥

दोहा।

कोइल सी बानी मधुर तौ मुख सों सुनि बाल।
होइ रही मोहितअरी पिय नँदलाल रसाल॥१३॥

सोरठा।

बरनत ग्रन्थनि माँहि, उपमावाचक धरम कौ।
जहँ उपमेयहि आहि, कहैं लुप्त उपमेय सो॥१४॥

दोहा।

रति सम सुन्दरि जाति है चली डुलावति बाँह।
तनजोबनदुतिजगमगैनिरखतछिनछिनछाँह॥१५॥

सोरठा।

बरनन करिये ऐन, उपमेय रु उपमान कौ।
बाचक धरम कहै न, लुप्तावाचक धरम सो॥

दोहा।

कमल बदन नँदलाल कौ अलि अलि मेरे नैन।
अनुरागे लागे रहैं सदा रूप रस लैन॥१७॥

सोरठा।

बरनत हैं सु ग्यान, उपमे धरम बनाइ कै।
बिन बाचक उपमान, बाचक उपमा लुप्त कहि॥

दोहा ।

पट दाबे पाटी गहे सोवति तिय पिय संग ।
मृग बिसाल नैननि लखै रहति समेटे अंग॥१९॥

सोरठा ।

कवि बरनन करि देय, अरु धर्म उपमान कौं ।
बिन वाचक उपमेय, वाचक उपमै लुप्त सो॥२०॥

दोहा ।

वृन्दावन बिहरत रही गल में बाँहो मेलि ।
लिपटी स्याम तमाल सौं सोहै सुबरन बेलि॥२१॥

सोरठा ।

बरनैं चतुर सुजान, उपमे वाचक समुझि कै ।
बिना धरम उपमान, लुप्त धरम उपमान सो ॥

दोहा ।

चुहचुहाट चटकन कियो चौंकि चले हरि जागि ।
मृग से दृगनि निहारि कै बाल रही गर लागि॥

सोरठा ।

नीको भाँति विचारि, कहि वाचक उपमान कौ ।
दोइ लोप करि डारि, लुप्त धरम उपमेय सो॥२४॥

दोहा ।

मुरली सुन्दर स्याम की रही सरस रस भोइ ।
ताकी धुनि श्रवनन सुनै रही म्रगी सी होइ ॥

सोरठा ।

ग्रन्थन कौं मत केय, वाचक धरम बखानिये ।
विन उपमा उपमेय, उपमा उपमै लुप्त कहि॥२६॥

दोहा ।

आए झूमत झुकत से चित्रित बने रसाल ।
मतवारे से रहन कौं चहियत ठौर बिसाल॥२७॥

सोरठा ।

कविता पावै ओप, ऐसे बरनन कीजिये ।
उपमै कहि करि लोप, वाचक उपमा धरम को॥

दोहा ।

रही मौन ह्वैकै कहा बैठी भौंह चढ़ाय ।
श्रवनन कौं सुख दै प्रिये कोयलबचन सुनाय ॥

गाथा ।

उपमै अरु उपमा ए दोऊ एक बात पै बरनै ।
होइ अनन्वय अलङ्कार सो नीकै उर मे धरनै ॥

दोहा ।

यह गोरी सी है यही गोरी परम रसाल ।
ऐसा सुन्दरि है यही तुमसे तुमही लाल ॥३१॥

चौपाई ।

लगैपरसपरउपमा जहाँ । उपमेउपमाकहियेतहाँ॥

दोहा ।

तू रम्भा सी रूप मैं ता सी रम्भा नारि ।
मोहन रहे लुभाय कै तेरी ओर निहारि ॥३३॥

प्रतीप वर्णन ।

या विधि प्रथम प्रतीप बखान ।
उपमे को कीजे उपमान ॥ ३४ ॥

दोहा ।

मोहि देत आनन्द हो वा मुख सो यह चन्द ।
लीनों आइ छिपाइ कै वैरी बादरबृन्द ॥३५॥

गाथा ।

उपमे को उपमा सो बरनत जहाँ अनादर जानो।
ताहि प्रतीप दूसरो कहिये चतुर सबै पहिचानो॥

दोहा ।

गरब करत गति को चलति गजगति नीके देखि ।
कहा करै तनदुति गरब सुबरन दुतिय अरेखि ॥

गाथा ।

बरनत मैं उपमे सो उपमा जहाँ अनादर पावै।
सुनोचतुरजनअलङ्कारयहतृतियप्रतीपकहावै ॥

दोहा ।

कोइल अपने वचन की आहि करति गुमान ।
मधुर वचन वनितानि के तेरे वचन समान॥३९॥

उपमे जोग न उपमा होइ ।
यह प्रतीप है चौथो सोइ ॥ ४० ॥

दोहा ।

हरिमुख सुन्दर अतिअमल शशि सम कह्यो न जाइ।
उर चवाव बात न लखत कहा कीजिये हाइ ॥

गाथा ।

व्यर्थ होय उपमान जहाँ है उपमे सार निहारै ।
यहप्रतीपपञ्चमकोरीतिहिउरधरिचतुरविचारै ॥

दोहा ।

प्यारी देखैं तो दृगनि मृग के दृग कछु नाहिँ ।
त्योंहो खञ्जन मीनहू कमल न कछू लखाहिँ॥४२॥

रूपक ।

उपमेय रु उपमान मिलि एक रूप ह्वै जाहिँ ।
यह रूपक को रूप है समुझि लेहु मन माहिँ ॥
इक तद्रूप अभेद इक कहियत रूपक दोय ।
अधिक न्यून सम एक इक तीन तीन बिधि होइ॥

दोहा ।

पिय हियकी सरसावनी तो मुख सुखमा कन्द ।
कमल अमल जान्यो अलिन लख्यो चकोरन चन्द॥

बहुतनि कै इक गुन मैं जानौ ।
सो द्वितीय उल्लेष बखानौ ॥६२॥

दोहा ।

सीता सील सरूप मैं तू रति की अनुहारि ।
बानी है वर बचन मैं सब गुन पूरी नारि ॥६३॥

उपमै लखि उपमै सुधि होय ।
सुमिरन जाहि कहैं सब कोइ ॥ ६४ ॥

दोहा ।

घुमड़ि घुमड़ि आयै सघन सरसावै उर काम ।
सुधि आवै घनश्याम की देखै ये घनश्याम॥६५॥

इक लखि इक को भ्रम मन होइ ।
भ्रान्ति अलङ्कृति कहिये सोइ ॥ ६६ ॥

दोहा ।

वृन्दावन विहरत फिरैं राधा-नन्दकिशोर ।
नीरद दामिनि जानि सँग डोलैं बोलैं मोर॥६७॥

निश्चै होत नहीं है जहाँ ।
कहि सन्देह अलङ्कृत तहाँ ॥ ६८ ॥

दोहा।

को है को है लित है सो है जोवन भार ।
है यह मार कुमार के सुन्दर नन्दकुमार ॥६९॥

सोरठा।

दीजे जहाँ छिपाय, वरननीय के धरम कों ।
आन धरम कहि जाय, शुद्धापन्हुति रीति यह ॥

दोहा।

उन्हो चाँद ह्वै के रह्यो दिन दुपहर को घाम ।
तेरो तन सुकुमार अति आव अहै इह धाम ॥

शुद्धापन्हुति में कहि जुक्ति ।
हैत अपन्हुति को यह उक्ति ॥ ७२ ॥

दोहा।

लखि सरवर के सलिल में नीको सोभित होय।
कञ्चन चञ्चल चन्दनहि बिन कलङ्क मख जोय॥

अनतहि के गुन अनतहि लहिये ।
पर्यस्तापन्हुति सो कहिये ॥ ७४ ॥

दोहा ।

नही सुधा मैं मधुरई मधुराई अधरानि ।
मो अधरानि मिलाय दै जीवदान सुखदानि॥७५॥

सोरठा ।

पर को भ्रम मिटि जाय, वचन कहै या रीति सौं।
समझि लेहु चित लाय, भ्रान्तापन्हुति कहत सब॥

दोहा ।

हियो सिरायो अति कहा चन्दन लियो लगाय ।
बहुत दिनन मैं भावती मोहि मिल्यो बलि आय॥

गाथा ।

जहँा और की शङ्का कहि कै साँची बात छिपावै।
छेकापन्हुति अलङ्कार सो ऐसी भाँति कहावै॥७८॥

दोहा ।

आँखे अति सीतल भई दोनौ ताप निवारि ।
क्यौंसखिपीतमकौलखैना सखि ससिहिंनिहारि॥

मिस सौं साँची बात छिपावै ।
कैतव पन्हुति तहँा कहावै ॥ ८० ॥

दोहा ।

निकसि तमालन सौं झमकि चञ्चल गति दरसाइ।
कामनि कै मिस सौं निकट दामिनि ह्वै ह्वै जाइ॥

मुख्य वस्तु पै आन की संभावना विचारि ।
उत्प्रेक्षा ताकौं कहत कविजन सब निर्धारि ॥
सो उत्प्रेक्षा त्रिविधि है वस्तु हेत फल जानि ।
वस्तु भेद द्वै द्वै विषय उक्ति अनुक्ति बखानि ॥
सिध असिद्ध विषिया द्विबिधि हेतु माँहि अवरेखि।
सिध असिद्ध त्रिषिया द्विविधि त्योंही फल मे लेखि॥
मानू बहुधा सङ्कता अति निहचै जिय जानि ।
भ्रमि यह जनु शब्दनि कहै उत्प्रेक्षा पहिचानि ॥

सोरठा ।

वस्तु उक्ति विषयाहि, उत्प्रेक्षा भाषै विषय ।
वस्तु माँहि ठहराहि, करै आन संभावना ॥८६॥

दोहा ।

सोहत सुन्दर स्याम सिर मुकुट मनोहर जोर ।
मनौ नीलमनि सैल पै नाचत राजत मोर॥८७॥

सोरठा ।

बरनि वस्तु के माँहि, होइ आन संभावना ।
विषय कहै जब नाँहि, सो अनुक्त विषया कहैं ॥

दोहा।

होरी खेलत है सखी दिसि जुवतिन सों जोर।
मानो वीर अवीर अति फैलि रह्यौ चहुंओर॥८९॥

सोरठा।

जब अहेत मैं कोइ, करै हेत संभावना।
विषय सिद्धि जहँ होइ, ताहिँ सिद्ध विषया कहैं॥

दोहा।

कैल छवीलै रावरे अधिक रसीलै नैन।
मानौ मदमाते भये तातें राते ऐन॥ ९१॥

सोरठा।

अनकारन मैं होइ, कारन की संभावना।
विषय सिद्ध नहि जोइ, हेत असिध विषया कहै॥

दोहा।

श्रीफल तेरे कुचन की समता राखत वीर।
समतासी नाते मनौ उन्हें विदारत कीर॥९३॥

सोरठा।

जहाँ अफल फल होइ, विषय सिध बरनन करैं।
फल उत्प्रेक्षा सोइ, सिद्ध विषया ताकों कहैं॥

दोहा ।

तेरे तन की बरन की सुबरन हो न समान ।
मानौं परि पावक जरै बरन्यौं सकल जहान॥९५॥

सोरठा ।

जहाँअफलकिसाँहि, विषयअसिधलखिफलगनै ।
असिध विषय ठहराहि, कवि फल उत्प्रेक्षा कहैं॥

दोहा ।

तेरे सूक्षम लङ्क की लहन एकता काज ।
करत मनौ बन बास है मृगनैनी मृगराज॥९७॥

उपमान बरनै बोध कहँ उपमेय कौ पहचानिये ।
तहँरूपकातिशयोक्तिकौहियमाँहिनीकेआनिये ॥

दोहा ।

बसि ससि मै नित नित रहै सरसावत पिय हेत ।
दो खञ्जन अञ्जन दिये मनरञ्जन करि देत॥९९॥

जोयहअपन्हुतिसहितअतिसयउक्तिकोवरननकरै।
सापन्हुवातिशयोक्तिकोकविहोयसोचिमनैधरै ॥

दोहा ।

और फलन मैं मधुर रस कहै चतुर वे हैं न ।
तो नथ के लटकन तरे बिम्ब भरे रस ऐन॥१०१॥

जब भेद औरै पदनि सों जा ठौर बरनन कीजिये ।
तबभेदकातिशयोक्तिनीकेसमभिमनमेंलीजिये ॥

दोहा ।

औरै चितवनि चखनि की औरैंही मुसकानि ।
औरैही तेरी चलनि औरैही बतरानि ॥ १०३ ॥

सोरठा ।

जहँ अजोग मैं जोग, प्रगट कल्पना कीजिये ।
बरनत हैं कवि लोग, सम्बन्धातिशयोक्ति सो ॥

दोहा ।

रविलौं ऊँचे महल में बैठि बिलासनि बाम ।
रीझि रिझावै सबन कौं पूरै मन के काम॥१०५॥

सोरठा ।

प्रगट कल्पना होइ, जब अजोग को जोग में ।
ताहिं कहत सब कोइ, असम्बन्ध अतिशयउकति॥

दोहा ।

पूरत पीतम काम जो उपजै मो मन माँहि ।
ताको सरभर कलपतरु कह्यो जात है नाँहि ॥

हेतु कारज संग आनौ ।
अक्रमातिशयोक्ति जानौ ॥ १०८ ॥

दोहा।

नन्द गाँव में जातही भलो भयो आनन्द ।
गोरसि नीके बिकि गयो निरख्यो गोकुलचन्द ॥

होत हेत प्रसङ्ग कारज तुरत जहँ हो जाइ ।
चञ्चलातिसयोक्ति ताकों कहत हैं कविराइ ॥

दोहा।

माँगी विदा विदेस कों पिय साहस उर लाय ।
सुनत बाल की हालही चूरी चढ़ी भुजाय॥१११॥

सोरठा।

पहले कारज होय, पीछे कारन होइ जब ।
भाषत हैं सब कोइ, अत्यन्तातिशयोक्ति सो॥११२॥

दोहा।

भरि प्यालो प्यारे कह्यो पियो प्रिया मद ऐन ।
पियो जु पीछे पहलही छके छवीले नैन ॥११३॥

एक धर्म वर्न्यन को होइ ।
तुल्ययोग्यता कहिये सोइ ॥११४॥

दोहा।

मोहन की मुरली सुनत गोपी और गुपाल ।
बिसरि गये गृह काज सब मनमोहित ह्वै हाल॥

धर्म अवर्न्यन को इक जहाँ ।
तुल्ययोगिता दूजी तहाँ ॥ ११६ ॥

दोहा।

करि लीनी चञ्चल चखनि प्रिय प्रवीन आधीन ।
चपलाई तजि ह्वै रहे धीरे खञ्जन मीन ॥११७॥

एक वृत्ति करि वर्नन कीजै हित में और अहित में।
तुल्ययोगिता यहै तीसरी नीके धरिये चित मे॥

दोहा।

तो चतुराई निरखि कै रीझि रहे गुनऐन ।
भरी लुनाई पियदृगनि अरु सौतिन कै नैन ॥

बड़े गुनन करि उपमा उपमै जहाँ बराबर लहिये।
यहहैतुल्ययोगिताचौथीसमझिभलीबिधिकहिये ॥

दोहा।

रमा सची रति उरवसी रम्भा गिरिजा नारि ।
तूहू है अति सुन्दरी हे वृषभानुकुमारि ॥१२१॥

बरन अवर्न्य धर्म इक लहिये ।
ताहि अलङ्कृत दीपक कहिये ॥१२२॥

दोहा ।

सरनि सरोजनि सौं तरुन फल फूलनि अधिकाय।
काजर सौं कामिनि दृगनि अति शोभा सरसाय॥

सोरठा ।

दीपक आवृति तीन, पहलो आवृति शब्द की ।
दुतिय अर्थ की कीन, तीजो पद अरु अर्थ मिलि ॥

दोहा ।

सरस कियो कानन सकल आवत मनमथ मित्त ।
कुसुम सरासन अरु सरस कियो काम निज चित्त॥

द्वितिय उदाहरण ।

आवतही परदेस से पिय प्यारो सुखदैन ।
लखि हरषि चष सखिन के मुदित भए तिय-नैन ॥

तृतीय दोहा ।

दमकन लागी दामिनी करन लगे घन घोर ।
बोलत माती कोइलै बोलत माते मोर ॥१२७॥

सोरठा ।

कहै वाक्य सम दोय, एकै अर्थ क्रियान को ।
कवि प्रवीन सब कोइ, भाषैं प्रतिवस्तूपमा॥१२८॥

दोहा।

राजै निस ससि सो निसा छाजै भए प्रकास ।
हिय सोहत है हार सो तिय सोहत पिय पास॥

बिम्बहि प्रतिबिम्बहि कौं बरनै ।
सो दृष्टान्त हिये मैं धरनै ॥ १३० ॥

दोहा।

प्रीति रावरी साँवरे रही सकल ब्रज छाय ।
फैली ससि की चाँदनी ज्यौं दिसान मैं जाइ ॥

सोरठा।

होइ एक आकार, होय वाक्य कै सम अरथ ।
ग्रन्थनि कै अनुसार, भाषैं सुकवि निदर्शना ॥

दोहा।

अनहठ पिय हिय नवल तिय लगै चाह सौं धाइ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि अलिन अनायास ह्वै जाइ॥

सोरठा।

और ठौर दरसाय, वृत्ति पदारथ की जहाँ ।
या विधि कहत बनाय, कविजन द्वितिय निदर्शना॥

दोहा।

धारत लीला मीन की लोचन तेरे बाल ।
सहजैही सोहैं भये मोहे रसिक रसाल ॥१३५॥

सोरठा।

होय क्रिया सो ज्ञान, जहँ असद सद अर्थ को।
सब कवि सुमति निधान, भाषत और निदर्शना॥

असदर्थ उदाहरण—दोहा।

तजत प्रीति वह दिनन की कौन रीति यह बाल।
कहा सिखावति हैं यहै ब्रज बनितानि कुचाल॥

सदर्थ—दोहा।

शील सुभाव भरी रहै खरी पगी पति-प्रीति।
तुही सिखावति सी भरी कुलबधूनि कुल रीति॥

सोरठा।

जहँ होय उपमेय, बढ़ि घटि सम उपमान सो।
जानि चतुरजन लेहुँ, त्रिविधि कह्यो व्यतिरेक यह॥

अधिक—दोहा।

राधे तौ मुखचन्द सो बिन कलङ्क सरसाय।
चष-चकोर नँदलाल के लखि अति रहे लुभाइ॥

न्यून—दोहा।

सुन्दरि सुन्दर चन्द सौं तेरो मुख छबि देत।
पै फैलत नहि चाँदनी यही न्यूनता एक॥१४१॥

सम—दोहा ।

चञ्चल हैं वे ये भटू चपलाई के ऐन ।
भेद नाम तें जानिये वे खञ्जन ये नैन ॥१४२॥

सोरठा ।

मनरञ्जन सहभाव, वर्णन मै प्रगटे जहाँ ।
जे प्रवीन कविराव,भाषत तहाँ सहोक्ति हैं॥१४३॥

दोहा ।

वाम मनावन आपुही आये श्याम सुजान ।
मान मानिनी संगही छूटै सौति-गुमान॥१४४॥

सोरठा ।

कछू वस्तु विन हीन, बरननीय जहँ बरनिये ।
अलङ्कार रस लीन, तासौं कहत विनोक्ति हैं ॥

दोहा ।

वसन आभरन मिलि भई सोभा सरस अतोल ।
सबै सिँगार अमोल पै फीको बिना तमोल॥१४६॥

सोरठा ।

काहुक बिना जा ठौर, बरननीय सोभा लहै ।
यह विनोक्ति है और, नीकी बिधि पहिचानियो॥

दोहा।

वह मोहन सब गुननि पुन जानत सब रस रीति।
है प्रतीति वाको निपट नहीं कपट की प्रीति॥

सोरठा।

प्रस्तुति बरनन माँहि, अप्रस्तुति प्रगटै जहाँ।
कवि बिन जानै नाँहि, समासोक्ति की रीति यह॥

दोहा।

सहित सुमन रस लैन में अलि यह परम प्रवीन।
पावै जहाँ सुबास है होत तहाँही लीन॥१५०॥

सोरठा।

जहाँ विशेषण होइ, अभिप्राय करिकै सहित।
भाषैं कवि सब कोइ, अलङ्कार परिकर तहाँ॥

दोहा।

सुधा-वचन आनँदकरन हिये दसा दरसाय।
बिकल परी वह बाल है चलि बलि लेउ जिवाइ॥

सोरठा।

बरनत हैं कविराइ, साभिप्राय विशेष्य जहँ।
अलङ्कार ठहराय, परिकर अङ्कुर सो तहाँ॥१५३॥

दोहा।

तन की रही सम्हार नहि गई प्रेमरस भोइ ।
मोहन लखि तेरी दसा क्यों न भटू यह होइ ॥

चौपाई।

एक शब्द में अर्थ अनेकनि भाषिये ।
श्लेष कहत हैं ताहि सबै यह साषिये ॥
वर्न्य अवर्न्यावर्न्य अवर्न्य बखानिये ।
अलङ्कार बिधि तीन सुधी पहिचानिये॥

वर्न्य—दोहा ।

गुननि-गसी हरि उर बसी जगर मगर अतिहोति।
नीकै निरखौ हगनि भरि सो तैसो हति जोति॥

अवर्न्य—दोहा ।

सोहै तेरो मुख जलज पूरन छबि सरसाइ ।
निरखे सोरे होत हग अरु पिय हियो सिराइ ॥

वर्न्य अवर्न्य—दोहा ।

मुरझाई सी रहति है बारी सुमन ललाम ।
रस करि प्रफुलित कीजिये ताहि बेग घनश्याम॥

सोरठा।

प्रगट अब हनित होइ, वर्ननीय की बरनिये ।
यह जानौं सब कोइ, अप्रस्तुत परसंस सो॥१५८॥

दोहा।

धनि वेई जो एक सों करत नेह निरवाह ।
रवि लखि फूलत कमल है ससि सों कछू न राह॥

सोरठा।

यों करनै इक रूप, प्रगटै आन सरूप सम ।
सुनौं सकल कवि भूप, सो सारूप निबन्धना ॥

दोहा।

हरि गोपी को रूप धरि आये राधा पास ।
पुलकिततनलखिकैहँसीहियअतिभयोहुलास ॥

सोरठा।

प्रगटै रूप विशेष, जब सामान्य सरूप सौं ।
भाषत सुकवि अशेष, सो सामान्य निबन्धना ॥

दोहा।

सङ्गति कुमति तियानि की करत रहति है बाल।
चाहत है नँदलाल सौं तू मन मान विसाल ॥

सोरठा।

अर्थ विशेष बखानि, प्रगट करै सामान्य कौ ।
कवि नीकै पहिचानि, कहत विशेष निबन्धना॥

दोहा ।

देत रूप कौं ओप अति तेरे नैन रसाल ।
मृदु बोलनि सौं लाल की भई सुहागिन बाल ॥

सोरठा ।

प्रगटे कारज अर्थ, कारन दृढ़ चल होइ जब ।
कवि जो होइ समर्थ, सो निबन्ध कारन कहैं ॥

दोहा ।

लई चतुरई जगत की दई दई सब तोहि ।
लीनौं नैक चितौनि मै मनमोहन-मन मोहि ॥

सोरठा ।

जहाँ बरनिये काज, कारन को बोधित करै ।
भाषत हैं कविराज, ताकौ काज निबन्धना ॥१६९॥

दोहा ।

सुढर बिसाल रसाल हैं कजरारे छबि ऐन ।
बङ्क बिलोकनि सौं अधिक सोभा पावत नैन ॥

सोरठा ।

प्रस्तुतअङ्कुर होइ, प्रस्तुत मै प्रस्तुति जहाँ ।
ग्रन्थनि नीकै जोइ, या बिधि कवि बरनन करैं॥

दोहा।

मधुर सुरङ्ग अनार कों तजि समीप सुखदैन ।
एरी कीर कईथ पै गयौ कहा रस लैन ॥१७२॥

सोरठा।

टेढ़ी रसना बात, गम्य अरथ प्रगटित करे ।
जे कवि मति अवदात, भाषैं पर्यायोक्ति सो ॥

दोहा।

जिन पद नख गङ्गा प्रगट भई भूमि मे आइ ।
तो तन लखि तिन करज छत मो अघ गये बिलाइ॥

सोरठा।

मन कौं भायौ काज, करिये मिस करिकै जहाँ।
भाषत हैं कविराज, पर्य्यायोक्ति द्वितीय सो ॥

दोहा।

बैठौ नीको छाँह मै तुम दोऊ वट-मूल ।
मै लै आऊँ कुञ्ज तै हरिहिँ चढ़ावन फूल॥१७६॥

चौपाई।

निन्दा मै स्तुति स्तुति मै निन्दा ।
स्तुति मै स्तुति पहिचानौं ॥

निन्दा मै निन्दा होवत सौ कहत व्याज निन्दा है।
ध्वनि भेदन सौं समझि समझि कै
सुमति सुकवि अवगाहै ॥ १७७ ॥

व्याजस्तुति—दोहा ।

कहा सिखाई कुटिलता लाल दृगनि दुखदैन ।
जा तन ताकत तनिकहू ताकि लगत न नैन ॥

स्तुतिनिन्दा—दोहा ।

मोहैही मन लेति यह छबि रावरी रसाल ।
आये हो मेरे लिये छकी छबीले लाल ॥ १७९ ॥

स्तुति मै स्तुति यथा—दोहा ।

तूही धन्य तमाल है करत रहत है केलि ।
प्यारी भुज सी पल्लवित तोसौं लिपटी बेलि ॥

व्याजनिन्दा—दोहा ।

समझावत ऊधो हमै झूठी बात बनाइ ।
वह तो कपटी कान्ह सौं दासी लियौ लुभाइ ॥

सोरठा ।

आप कहै कछु बात, बरजै ताहिं बिचारि कै ।
कविजन मन अवदात, बरनत यौं आक्षेप है ॥

दोहा।

छितकरि चित न चुराइये काहु सखि पिय सों जाइ।
जिन जा तू मैहो सबै कहि लैहों समझाइ॥१८३॥

सोरठा।

कहै आप जो बैन, ताको करै निषेध कछु।
कविजन जे मति ऐन, कहैं निषेधाभास सो॥

दोहा।

तुम सों सरस सनेह पिय छिन छिन मै सरसात।
हों न कहत सुख ते कढ़त चिकने हित की बात॥

सोरठा।

जहाँ प्रगट विधि होय, करै निषेध छिपाइ कै।
कवि बरनैं सब कोय, यों तृतीय आक्षेप को॥

दोहा।

कीजे गवन विदेश जो तुम्है सुहायौ लाल।
फूल्यौ सरस सुहावनो निरखौ नैक रसाल॥

सोरठा।

जबै विरोध न होत, बरनत लगै विरोध सों।
कविजन सुमति उदोत, कहत विरोधाभास सो॥

दोहा।

लाल तिहारे रूप सों मन अति रह्यो लुभाइ ।
करत अहित हित है तऊ मो हिय रह्यो समाइ॥

सोरठा।

बरनत हैं कविराज, ग्रन्थन को मत देखि कै ।
होय हेतु बिन काज, सो है प्रथम विभावना ॥

दोहा।

अति सुन्दर तेरे अधर सुनि राधिके रसाल ।
बिन तमोल ये रहत हैं सदा पहचहे लाल॥१८१॥

सोरठा।

कारज पूरो होय, थोरे कारन मैं जहाँ ।
कवि प्रवीन सब कोइ, भाषैं द्वितिय विभावना॥

दोहा।

निकसि अचानक द्रुमन तें छैल छबीलो आइ ।
नैक मन्द मुसक्याइ के मन लै लयो लुभाइ ॥

सोरठा।

प्रतिबन्धकहू होय, तोहू प्रगटै काज जब ।
समझि चतुर सब कोइ, भाषैं तृतिय विभावना॥

दोहा।

गुरुजन डाट डटे नये खरे परे वस मैन।
नागर नट के रूप सों बरबट अटके नैन॥१९५॥

सोरठा।

कारज जाहिर होइ, जहाँ अकारन वस्तु तें।
कहैं सुमति सब कोइ, चौथी ताहिँ विभावना॥

दोहा।

अदभुत सुख प्यारी लह्यो भयो भावतो काज।
कोमल विद्रुम अधर रस पान कियो मैं आज॥

सोरठा।

कारज होइ विरुद्ध, काहू कारन तें जहाँ।
कविजन जो मतिशुद्ध, पञ्चम कहत विभावना॥

दोहा।

लाल रावरे रूप की निपट अनोखी बानि।
अधिक सलौनो है तऊ मधुर लगत अखियानि॥

सोरठा।

कहियतु भले बनाइ, कारज तें कारन-जनम।
समझि लेहु मन लाइ, सो है छठी विभावना॥

दोहा।

चतुराई तेरी अरी मोपै कहत बनै न ।
निकसत मुख-ससि सो बचन रस-सागर सुखदैन॥

सोरठा।

पूरन कारन होय, काज न होइ तऊ तहाँ ।
विशेषोक्ति है सोइ, समझि लेहु सब चतुरजन॥

दोहा।

आली या ब्रज छैल के अंग अंग छविखानि ।
निरखत मै नहि होत है इन अँखियानि अघानि॥

सोरठा।

काजसिद्धि ह्वै जाइ, जहाँ बिना सम्भावना ।
सब पण्डित कविराइ, ताहि असम्भव कहत हैं॥

दोहा।

को जानत हो इन्द्र कों जीति कल्पतरु ल्याय।
सतभामा के सदन मै हरि लगाइहैं आय ॥२०५॥

सोरठा।

कारन कहिये अन्त, कारज अन्त बखानिये ।
जो कहिये गुनवन्त, ताहिँ असङ्गति कहत है ॥

दोहा।

निपट नई यह बात है मो पै कही न जाय ।
तुम निसि जागे मो दृगनि भई अरुनई आय ॥

सोरठा।

और ठौर को काम, और ठौरहो कीजिये ।
जे कवि हैं मतिधाम, कहैं असंगति दूसरी ॥

दोहा।

बंशी धुनि सुनि ब्रज-वधू चली बिसारि बिचार।
भुज-भूषन पहिरे पगनि भुजन लपेटे हार॥२०९॥

सोरठा।

करन लगे जो काज, साई करे बिरुद्ध जहँ ।
भाषत हैं कविराज, ताहि असंगति तीसरी ॥

दोहा।

बिरह-ताप मेटन गई सीतल बाग विचारि ।
बिरह-ताप दूनों कियो तहाँ बहार निहारि ॥

द्विपदी।

बरनै अनमिल दोइ, विषम अलङ्कृति होइ ।

दोहा।

सरल कुटिल के मिलन कों ऊधो अधिक अजोग।
कहाँ कान्ह कुबिजा कहाँ कैसे बन्यौ सँजोग ॥

हेतु काज रँग औरैं और ।
द्वितिय विषम कहिये तिहिँ ठौर ॥ २१४ ॥

दोहा ।

गोरो सोभा को सदन तेरो बदन ललाम ।
भयो लाल रँग लाल को लखे सौति रँग श्याम॥

हिय को जतन अहित ह्वै जाइ ।
तीजो विषम कहैं कविराइ ॥ २१६ ॥

दोहा ।

तेरी मतवारी दसा चकित भई हौं जोइ ।
मोहन को मोहन गई आई मोहित होय॥२१७॥

दो अनुरूप बरनिये जहाँ ।
अलङ्कार सम कहिये तहाँ ॥२१८॥

दोहा ।

सागर सौं कमला निकसि निरखि आप समान ।
निदरि सुरनि असुरनि बरे गुननिधान भगवान॥

कारन गुन कारज मैं लहिये ।
अलङ्कार सम दूजो कहिये ॥२२०॥

दोहा ।

प्यारे चितवनि रावरी रही अतुल रस भीइ ।
भई रसीली चखनि सौं क्यौं न रसीले होइ ॥

कारज सिद्धि बिना श्रम होइ ।
अलङ्कार सम तीजो सोइ ॥२२२॥

दोहा।

होरी खेलन श्याम सँग साँज सँवारी बाल ।
तबही लिये गुलाल कों आय गये नँदलाल॥२२३॥

फल विपरीति जतन करि चाहै ।
यह विचित्र की राह सदा है ॥२२४॥

दोहा।

पति-सेवा मैं रति रहत नितिही चित सौं बाल।
नवति ऊँचाई लहन कों यह चतुरई विशाल ॥

सोरठा।

बरनि बड़ो आधार, तासौं बढ़ि आधेय कहि ।
करि नीके निरधार, अधिक अलङ्कृति कवि कहैं॥

दोहा।

मोहन रसना एक सो कैसे बरने जाइ ।
अँग अँग गुन हैं रावरे त्रिभुवन मै न समाय ॥

सोरठा।

बरनि बड़ो आधेय, तातें बढ़ि आधार कहि ।
है तू सुमति अमेय, समझि चित्त दूजो अधिक॥

दोहा।

अखिल लोक जाकी उदर भीतर रहै समाइ ।
सो हरि तैं कैसे अरी राख्यो हिये बसाइ ॥२२९॥

सोरठा।

सूछम होय अधार, जहाँ अलप आधेय तैं ।
जानत कवितासार, सो बरनत हैं अलप को ॥

दोहा।

मोहि सदा चाहत रह्यो चित सौं नन्दकुमार ।
मो मन नाजुक नहि सकै तनिक रुखाई भार ॥

जहँ अन्योन्य होय उपकार ।
सो अन्योन्य कह्यो निरधार ॥ २३२ ॥

दोहा।

मिलि सदा रहिये कहूं नहि तजिये हित राह ।
पिय सौं नीको तिय लगै तिय सौं नीको नाह॥

बिन अधार आधेय जहाँ है ।
कविजन कहत विशेष तहाँ है ॥ २३४ ॥

दोहा।

लालन गये विदेश कौं कहि कै हित के बैन ।
उनके गुन हिय मै रहे छाय कहूं बिसरै न॥२३५॥

एक वस्तु बरनै सब ठौर ।
सो विशेष कहियत है और ॥ २३६ ॥

दोहा ।

नगर बगर बागनि डगर डारनि कुञ्जन धाम ।
बंशीबट जमुना निकट जित देखो तित श्याम ॥
कछुक जतन तैं सुलभ लाभ मैं दुर्लभ लाभै मानै ।
होतविशेषतीसरोयाविधिकविकोविदपहिचानै ॥

दोहा ।

लगी लालसा रहति ही मन मैं आठौं जाम ।
तुम निरखि घनश्याम सौं नैननि निरख्यौ काम॥
हित कौं अहित बरनिये जहाँ ।
है व्याघात अलङ्कृत तहाँ ॥ २४० ॥

दोहा ।

जिन किरनिन सौं जगत कौं बरसि सुधा-सुख देत ।
तिनही किरननि चन्द तू मो चित करत अचेत॥
द्वितिय बिरोधी क्रिया बखानै ।
सो व्याघात दूसरो जानै ॥ २४२ ॥

दोहा।

सो सखिचरि उररहत है अधिक दया जो तोहि।
मतितजिबिनतीमानियहलैचलिसँगबलिमोहि॥

बहु हेतुन कौं गहिये जहाँ।
कारनमाला कहिये तहाँ ॥ २४४ ॥

दोहा।

दरसन सौं लागे लगनि लगनि लगे सो प्रीति।
प्रीति भये सो उठति है मन मिलाप की रीति॥

कहै पदनि कौं तजि तजि दीजे औरै औरैं दीजे।
यह है एकावली अलङ्कृत नीके बरनन कीजे॥

दोहा।

उर पर कुच कुच कञ्चुकी कञ्चुकि ऊपर हार।
तहाँ जाय मोहित भयो पिय मन करै विहार॥

एकावलि दीपक मिलि जाइ।
सो मालादीपक ठहराय ॥ २४८ ॥

दोहा।

भूमण्डल मैं ब्रज बसत ब्रज मै सुन्दर श्याम।
सुन्दर स्याम स्वरूप मैं मो मन आठौं जाम॥२४९॥

एक एक सो सरस जहाँ है ।
अलङ्कार कहि सार तहाँ हैं ॥ २५० ॥

दोहा ।

धन सौं प्यारो धाम है तासौं प्यारो जीव ।
जी सौं प्यारो पुत्र है सब सौं प्यारो पीव॥२५१॥

क्रमी पदनि कौं क्रम सौं नीके अरथै जहाँ लगैये।
यथासंख्य की वरनन करिकै या विधि से समुझैये॥

दोहा ।

लखि नवजोबन जोतिजुत तो मुख सुन्दर चन्द ।
पिय हिय सौतिन सखिन भौ नेह अनख आनन्द॥

क्रम सौं एक बहुत थल कहिये ।
सो पर्य्याय समझि सुख लहिये॥२५४॥

दोहा ।

जाहू बजाई बाँसुरी बन मै सुन्दर श्याम ।
ता धुनि कुञ्जन ह्वै श्रवन आय कियो मम धाम॥

एक ठौर बहु वस्तुनि लहै ।
सो पर्य्याय दूसरो कहै ॥ २५६ ॥

दोहा।

नई तरुनई वदनदुति नई भई मुसक्यानि ।
चञ्चल चितवनि रसमई भई तिया तन आनि ॥

थोरो दै कै वहुतै लहै ।
अलङ्कार परिवृति कहि दहै ॥ २५८ ॥

दोहा।

अरी चतुरई चतुर की मो पै कही न जाइ ।
नैक दिखाई दै ललन मन लै गयो लुभाइ॥२५९॥

एक ठौर तै वरजि वस्तु कौं और ठौर मै थापै ।
परिसंख्याकोवरननकविविनकहौवनतहैकापै ॥

दोहा।

अहै चञ्चलाई कछू खञ्जन मै है नाँहि ।
है री एरी नागरी तेरे नैननि माँहि ॥ २६१ ॥

दोइ तुल्य मैं होय विरुद्ध ।
ताहि विकल्प कहै कवि शुद्ध ॥२६२॥

दोहा।

प्यारे वारी जाउँ मैं साँची कहियै हाल ।
वासौं सरस सनेह है कै मोसौं नँदलाल ॥२६३॥

सोरठा।

एक संगब जहँ ठौर, भा गुंफ बहुतै भजै ।
जे हैं कवि शिरमौर, ताहि समुच्चय कहत हैं ॥

दोहा।

आइअचानकमाडिमुखहँसिभजिमुखफिरिधाई॥
बाल छबीले लाल पर गई गुलाल चलाइ॥२६५॥
द्वौं पहिले कहि एक कारज पर अन्वयभव कोकीजै।
हैयहद्वितियसमुच्चयकविजनभलैसमझिमनलीजै॥

दोहा।

गुनगन बाई चतुरई जोबन रूप रसाल ।
ए सब बिहँसि परे खरे करै तोहि मदवाल ॥

सोरठा।

जहँा एक सो होइ, क्रम सौं गुंफ क्रियानि को।
कारक दीपक सोइ, तहँा चतुरजन कहत हैं ॥

दोहा।

चञ्चल बाल सखीनि में चितवत हँसति लजाति।
गावति ऐंड़ावति चलति पिय तन चितवत जाति॥

सोरठा।

सुगम काज ह्वै जाइ, आन हेत के संग सो ।
सो समाधि ठहराइ, लीजै मन मैं समझि कै ॥

दोहा।

लाल मिलन कौं हेतही तिय मन अधिक अधीर।
तबही घर ते टरि गई सब गुरुजन की भीर ॥

बली शत्रु के सङ्गी ऊपर करिकै जोर चलावै ।
प्रत्यनीक को नीके बरनन करिकै सुकवि बतावै॥

दोहा।

तो पर जोर चल्यो न कछु निबल अपनपो मानि।
केलनि कौं तोरत करी जाँघनि की सम जानि॥

कहा अर्थ की सिद्धि जहाँ है ।
काव्यार्थापत्ति कहो जहाँ है ॥ २७४ ॥

दोहा।

गति तें जीते हंस हैं कौन करी मद धाम ।
रति जीती तें रूप सो कहा जगत की बाम ॥

समर्थनीय अर्थ को जहाँ समर्थ कीजिये ।
बखान काव्यलिङ्ग को तहाँ विचार लीजिये ॥

दोहा।

अनियारे दैही बहुरि काजर लागी दैन ।
नायक-मन बस करन कौं लायक तेरे नैन ॥

कहि विशेष सामान्य बखानै ।
यौं अर्थान्तरन्यासहि जानै ॥ २७८ ॥

दोहा ।

राधे आधे दृगनि लगि मोहन लीनौं मोहि ।
रूपभरी अति गुनभरी कहा कठिन है तोहि ॥
संग बड़े को पाइ बड़ाई अलप लहै ।
सो अर्थान्तरन्यास समुझि कै कवि कहै ॥ २८० ॥

दोहा ।

चली भली तू इहिँ गली अली कढ़ी कहुँ आइ ।
लखा तरु की रज पिया नैननि लई लगाइ ॥
कहिविशेषसामान्यकहैपुनिबहुरिविशेषबखानै ।
कह्यो विकस्वर अलङ्कार यह चतुर होइ सो जानै ॥

दोहा ।

मोहि लियो पिय है यहै चतुर तियनि की रीति ।
बस करिकै ब्रजसुन्दरी जोरि लेत है प्रीति ॥

सोरठा ।

बड़े अकारन माहिँ, कारन को कलपित करै ।
कोउ समझै नाहिं, कवि बिनयाप्रौढ़ोक्ति को ॥

दोहा।

अरुन सरस्वतिकूल के बन्धुजीव के फूल ।
वैसेही तेरे अधर लाल लाल अनुकूल ॥ २८५ ॥

जो यों हो तो कहिये जहाँ ।
सो संभावना कहिये तहाँ ॥ २८६ ॥

दोहा।

ऊधो जौ होतो कछू ब्रजवासिन सों प्यार ।
तो मथुरा से आवते कान्ह एकहू बार ॥ २८७ ॥

झूठे कारन में विधि नीकी झूठी रचना कीजे।
मिथ्याध्यवसितिअलङ्कारयहसमभिचित्तमैलीजै॥

दोहा।

दोऊ कमल पै चरन धरि चढ़ी नदी ह्वै पार ।
मुग्धा सो कीनी सुरति मोहित करि तिहिँ बार॥
प्रस्तुत तजिकै अप्रस्तुत को तहँ प्रतिबिम्ब बखानै॥
अलङ्कार यह ललित कहावै चतुर होय सो जानै॥

दोहा।

ग्रीषम दयो बिताय सब एरी बौरी बौर ।
बनवावत पावस समै अब यह महल उसीर ॥

इच्छित अरथ जतन बिन पावै ।
तहाँ प्रहर्षन बरनि जतावै ॥ २६२ ॥

दोहा ।

अली सहजही बनि गयो जो मन हुतो बिचार ।
वही भावतै बाँह गहि करो नदी के पार ॥२६३॥

अधिक लहै इच्छित सों जहाँ ।
द्वति प्रहर्षन कहिये तहाँ ॥ २६४ ॥

दोहा ।

अरे चितेरे मित्र को अबहीं लिख दै चित्र ।
कही तिया तबही दयो दरसन प्यारे मित्र ॥
जाके लिये उपाय कीजिये ताही को जो लहिये ।
तृतिय प्रहर्षन अलङ्कार यह तहाँ समझिकै कहिये॥

दोहा ।

पिय आवन हित पथिक सों कहन लगी समझाइ।
तबही चल्यो विदेस लों मिल्यो भावतो आइ ॥

इच्छित अर्थ जबै नहि होइ ।
जानौ तबै बिषादन सोइ ॥ २६८ ॥

दोहा ।

दिनही मै निस मिलन को कियो मनोरथ बाल ।
साँझ होत परदेश को चल्यो पियारो लाल ॥

इक के गुन सौं गुन एक लहै ।
कविराज तहाँ उल्लास कहै ॥ ३०० ॥

दोहा ।

बन्धुजीव की माल गर नैकु पहरि लै बाल ।
चाहत हो न सुबास यह तो तन परसि रसाल ॥

सोरठा ।

दोष एक सौं होइ, जहाँ एक के दोष सौं ।
कहत चतुर सब कोइ, तहँ तृतीय उल्लास कहि ॥

दोहा ।

रही मनाइ मनै नहीं मानी नन्दकिसोर ।
लै कठोरता स्याम की मैहू होउँ कठोर ॥३०३॥
इक के गुन सौं दोष एक जब लहत है ।
तहँ तृतीय उल्लास चतुरजन कहत है ॥ ३०४ ॥

दोहा ।

लाज चतुरई सीलजुत तिय गुनरूपनिधान ।
एतै पर रीझत न तौ पिय हिय मै न सयान ॥
जहाँ दोष सौ गुन ठहरावै ।
सो चौथो उल्लास कहावै ॥ ३०६ ॥

दोहा ।

सुख सौं दधि बेचति फिरैं और सबै ब्रजबाल ।
घेरि रहे हरि मोहि यह रूप भयो जञ्जाल॥२१४॥

जब दोष माँहि गुन कहिये ।
तब लेस दूसरो लहिये ॥ २१५ ॥

दोहा ।

रिस सौं गोरे वदन मैं भई अरुनई आई ।
यह छवि माननि की रही पिय हिय माँहि समाइ॥

और अर्थ प्रस्तुत मै कहै ।
जानि अलंकृत मुद्रा यहै ॥ २१७ ॥

दोहा ।

होइ बावरी जो सुनै बंसीनाद रसाल ।
या बंसी बौरी करी ब्रज की बहुतै बाल ॥२१८॥

क्रमित पदनि को क्रम तै न्यास ।
यह रत्नावलि कियो प्रकास ॥ २१९ ॥

दोहा ।

वानी बिधि कमला रमन गौरी शिव अभिराम ।
सब गुन जुत तुम लसत हौ श्रीराधा घनश्याम॥

दोहा।

तुम लीखो चितवनि चितै करी वाहि बेहाल ।
लाभ यही जीवत रहो वह ललना नँन्दलाल ॥

गुन औगुन और के लागे नहीं ।
मन लीजिये जानि अवज्ञा ह्यां तहीं ॥

दोहा।

तेरे संग सखी सबै चतुर सुमति की खानि ।
तऊ तजै नहि बाम तू कुटिलाई की बानि ॥

पुनः दोहा।

परी जो सूरजमुखी मुख शशि और करयो न ।
तौ अलि उड़गनराज को कछू प्रभाव घट्यो न ॥

जहँ औगुन कौं गुन साजै ।
मन तहाँ अनुज्ञा जानै ॥ ३११ ॥

दोहा।

ऊधो बिछुरनही भलो मिलन चहत हम नाहि ।
नन्ददुलारो साँवरो सदा बसै मन माहिँ ॥३१२॥

गुन मैं जहँ दोष बखानै ।
तहँ लेस अलंकृति जानै ॥ ३१३ ॥

निज गुन तजि सङ्गतिगुन लहै ।
अलङ्कार सो तद्गुन कहै ॥ ३२१ ॥

दोहा ।

मुक्तामाल दई जु तुम पहरि लई उहि बाल ।
तन दुति मिलि पुखराज की भई बाल नँदलाल॥

सोरठा ।

रूप आन को लेइ, तजि फिरि निज रूपहि लहै ।
पूर्वरूप कहि देइ, ग्रन्थनि के अनुसार सौं ॥

दोहा ।

राधा-तनदुति मिलि भये तुम गोरे अभिराम ।
फिरि उन सौं अन्तर भये रहे श्याम के श्याम ॥

बिगरे वस्तु वही रँग रहै ।
पूरबरूप दूसरो कहै ॥ ३२५ ॥

दोहा ।

बैठी हुती प्रभाभरी बाल चाँदनी माहिँ ।
शशि अथयेहू रूप को मिटो उजेरो नाहिँ॥३२६॥

सङ्गति गुन लागे नहि जहाँ ।
कहत अतद्गुन कविजन तहाँ॥ ३२७ ॥

दोहा।

वा गोरी अनुराग-रँग तुम रँग रहे रसाल ।
रहे साँवरेही तऊ गोरे भये न लाल ॥ ३२८ ॥

परसङ्गति सो निज गुन दरसै ।
अलङ्कार तहँ अनुगुन सरसै ॥ ३२९ ॥

दोहा।

गई चाँदनी वनक बनि प्यारी पीतम पास ।
शशि-दुति मिलि सो गुन भयो भूषन बसन प्रकास॥

जहँ समान तें भेद न भासै ।
कविजन मीलित तहाँ प्रकासै ॥३३१॥

दोहा।

श्याम नीलमनि महल से मिलि दुति नहीं दिखाइ।
कहाँ कान्ह सखि राधिका बोली अति अकुलाइ ॥

समता सों न विशेष लहै जब ।
अलङ्कार सामान्य कहैं तब ॥ ३३३ ॥

दोहा।

बैठे दरपन-सदन मै चारु बदन नँदलाल ।
ठौर ठौर प्रतिबिम्ब लखि चकित ह्वै रही बाल॥

मीलित मै तव भेद वखानै ।
अलङ्कार उन्मीलित जानै ॥ ३३५ ॥

दोहा ।

भूषन सुबरन तन वरन मिलि लखाहिँ है नाहि ।
परस करे कोमल कठिन एरो जानै जाहि॥३३६॥

सामान्य में होत विशेष जबै ।
यह नाव विशेषक जानौं सबै ॥३३७॥

दोहा ।

सरसे कमलनि मधि वदन तिय की परै न जानि ।
मुसक्यावनि लावनि पलक बतरावनि पहचानि ॥

अभिप्राय सो उत्तर कहै ।
अलङ्कार गूढ़ोत्तर यहै ॥ ३३८ ॥

दोहा ।

जल फल फूल भर्यो हर्यो सुखद सघन आराम ।
इत ह्वै जो निकसत पथिक विरमि निवारत घाम॥

प्रश्न पदन मैं उत्तर कहै ।
सोई चित्र अलङ्कृत लहै ॥ ३४१ ॥

दोहा।

अलि लोभी रस को महा को समान नृप होइ।
दिन संजोगी को कहै रैनि वियोगी सोइ॥३४२॥

बहु प्रश्ननि को उत्तर एक।
द्वितिय चित्र कवि कहत अनेक॥३४३॥

दोहा।

राधा रहति कहाँ कहो को है सुरपति धाम।
रुचिर हिये पर को लसै कहो उरवसी श्याम॥
आशय लखि पर को सैननि में मनको भाव जनावै।
समझि लेहु तब अलङ्कार यह सूक्षम नाम कहावै॥

दोहा।

चितै कौलितरु तनहिं तें तिय तन चितये लाल।
निज उर कर धरि बिहँसि कै परस्यो बाल तमाल॥

सोरठा।

पर के मन की बात, जानि जतावै करि क्रिया।
जे कवि मति अवदात, पिहित अलंकृत कहत हैं॥
प्रीतम आये प्रातही, अनतै रैनि बिताइ।
बाल दिखायो आदरस, सादर सों बैठाइ॥३४८॥

सोरठा ।

गुप्त करै आकार, आन हेत की उक्ति सौं ।
यह व्याजोक्ति विचारि, समझैं नीके चतुरजन ॥

दोहा ।

फूल लैन कौं साँझ मैं आज गईही बीर ।
अरुन बिम्ब सि जानि कै करे अधर छत कीर ॥

सोरठा ।

कहै और सौं बात, जब सुनाइ कै और कौं ।
जे कवि मति अवदात, सो बरनै गूढ़ोक्ति कौं ॥

दोहा ।

एरे रसलोभी भँवर सब दिन कियो विलास ।
साँझ होत तजि कमल कौं अब करि अनत निवास॥

सोरठा ।

श्लेष छिप्यो जब होइ, सो कोविद जाहिर करै ।
ग्रन्थनि को मत जोइ, तहाँ कहत विवृतोक्ति हैं॥

कहुं गरजो सरसो कहूं, कहुं दरसो घनश्याम ।
कहुं तरसावतिही रहो कहत जनाये बाम॥ ३५४॥

जहाँ क्रिया सौं मरम छिपावै ।
तहाँ अलंकृत जुक्त कहावै ॥ ३५५ ॥

दोहा।

चित्र मित्र को लिखत हो कामिनि सुमतिनिधान॥
निरखि सखी को लिखि दियो कुसुम धनुष कर बान।

दुनिया को कहनावति कहै ।
तहँ लोकोक्ति अलङ्कृत लहै ॥२५७॥

दोहा।

ऊधो कछु दिन बसि कियो वा कपटी सँग भोग।
कहाँ कान्ह अब हम कहाँ नदी नाव सँजोग ॥
लोकोकति मै आन अर्थ कों जब गरभित करि दीजै।
सो छेकोकति अलङ्कार है समझि चित्त मै लीजै॥

दोहा।

ऊधो तुम जानौ कहा जानै कहा अहीर ।
जानत नीकी भाँति है बिरहनि बिरहिनि-पीर ॥

सोरठा।

श्लेष काकु मै होइ, आन अर्थ की कल्पना ।
कवि कोविद सब कोइ, ताहि कहत वक्रोक्ति है॥
मुरली धुनि मोहत बनै यहै बंस की सोइ ।
मोहन मुख लागी बजे क्यों न मोहिनी होइ ॥

जाति सुभा बखानै ।
स्वभावोक्ति पहिचानै ॥ ३६३ ॥

दोहा ।

धरि कपोल पै आँगुरी बाल काहल मुसिकाइ ।
एरी यह तेरी अदा मन कों लेत लुभाइ॥३६४॥
भूत भविष वर्त्तमान कौं जब परतछ दिखावै ।
याबिधिभाविक अलङ्कारकौं बरननचरितसभावै ॥

दोहा ।

पूरि प्रेमभरि सदा राधा नन्दकुमार ।
लखि आईं चलि लखि अटू अजलौं करत बिहार॥
चरित प्रशंसा कीजै ।
तहँ उदात कहि दीजै ॥ ३६७ ॥

दोहा ।

बिहरैं बृन्दाबिपिनि मैं बनितनि मैं ब्रजराज ।
सुर-नारी मोहित भईं जोहत सकल समाज ॥
रिद्धिवन्त यह चरित बखानै ।
तहँ उदात दूजो पहिचानै ॥३६८॥

दोहा।

बसन जरी के पहरि कै बैठी सुबरन-धाम ।
निकट गये पैं सखिनह्न नीठि निहारी बाम ॥

सोरठा।

अद्भुत मिथ्या होय, जहँ उदारता सूरता ।
कवि कोविद सब कोइ, द्विबिधि कहत अत्युक्ति हैं॥

दोहा।

नन्द हिये नन्दन भये मनि सुबरन के ढेर ।
कामधेन गोपी भई जाचक भये कुबेर ॥ ३७२ ॥

द्वितिय—दोहा।

बीर बड़ो साहस कियो तू सुकुमार शरीर ।
ये रद-छद नख-छद सहे निरखी रति-रनधीर ॥

औरैं अरन नाम के जोग ।
ताहि निरुक्त कहत कवि लोग॥२७४॥

दोहा।

निसबासर बिहरत फिरौ बहु बनितनि के धाम ।
नीकी बानि गही कियो सही बिहारी नाम ॥

प्रगट निषेदहिँ कहिये ।
तहँ प्रतिषेधहिँ लहिये ॥ ३७६ ॥

दोहा।

वहुत समझि कै कीजिये निपट कठिन है रीति।
हँसी खेल की बात नहि यहै नागरी प्रीति॥३७७॥

जहँ सिद्धि विधान बखानै।
तहँ अलङ्कार विधि जानै॥ ३७८॥

दोहा।

जैसी पावस मैं लगै ऐसी अब कछु नाहिँ।
कैकी है कैकी करै जब कै कारित माहिँ॥३७९॥

हेतुमान सँग हेतु बखानै।
या विधि हेतु अलङ्कृत जानै॥३८०॥

दोहा।

कामिनि अति हरषित भई फरकत बाँमौं नैन।
जान्यौ आइ विदेश तें मिलिहैं पिय सुखदैन॥

सोरठा।

कारन कारज होइ, वस्तु एक मैं होय जब।
हेतु दूसरो सोइ, चतुर रसिकजन जानियो॥३८२॥

दोहा।

जा तन तुम चितवत तनक मन्द मन्द मुसिक्याइ।
ताहि तुरत सब भाँति सौं नवनिधि सुख सरसाइ॥



चन्द्रमुखी वृषभानुजा गौरद नन्दकिशोर ।
चित-चकोर चातक भयो लख्यो रह्यो तिहिँ ओर॥
निसिदिन बरनतही रहौं गुन रावरे रसाल ।
विषयनि मै पागौं नहीं यह माँगौं नँदलाल ॥
नरवलगढ़ नृप वीरवर छत्रसिंह मतिधाम ।
रामसिंह तिहिँ सुत कियो नयो ग्रन्थ अभिराम॥
अलङ्कारदर्पन रच्यो ग्रन्थ बड़ो विस्तार ।
हित करि चित मै समझियो कविता समझनहार॥
सरस रुचिर सुवरन रचित खचित रतन पद बेस।
रुचि करि धारहु रसिकजन यह ऽलङ्कार हमेस ॥
ग्रन्थ प्रगट जब होइ अति हरि विनती सुनि लेहु।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि तें अधिक सिद्धि यह देहु ॥
मन लगाइ या ग्रन्थ कौं समझि पढ़े जो कोइ।
सोभा लहै सभानि मै जग जाहिर कवि होइ ॥
बरस अठारह से गनौं पुनि पैंतीस बखानि ।
माघ मास सुदि पञ्चमी कवि सब्बत पहिचानि॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा राम-
सिंहजीकृत अलङ्कारदर्पण ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।